विजया दशमी की कथा PDF

एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से विजयादशमी के फल के बारे में पूछा। भगवान शिव ने उत्तर दिया- आश्विन शुक्ल दशमी को सायंकाल तारा उदय होने पर विजय नामक काल होता है, जो सभी मनोकामनाएं पूर्ण करता है। यदि इस दिन श्रवण नक्षत्र का संयोग हो तो यह और भी शुभ हो जाता है। इस विजय काल में भगवान राम ने लंकापति रावण को हराया था।

इसी काल में शमी वृक्ष ने अर्जुन का गांडीव धनुष धारण किया था। भगवान शिव ने उत्तर दिया- दुर्योधन ने पांडवों को जुए में हराने के बाद 12 वर्ष का वनवास और तेरहवें वर्ष में अज्ञातवास की शर्त रखी थी। यदि तेरहवें वर्ष में उनका पता चल जाता तो उन्हें 12 वर्ष का वनवास और भुगतना पड़ता।

इस अज्ञातवास में अर्जुन ने अपना गांडीव धनुष शमी वृक्ष पर छिपा दिया था और स्वयं बृहन्नला के वेश में राजा विराट की सेवा करते थे। जब गायों की रक्षा के लिए विराट पुत्र कुमार अर्जुन को अपने साथ ले गए तो अर्जुन ने शमी वृक्ष पर से अपना धनुष उठा लिया और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। विजयादशमी के दिन जब रामचन्द्रजी लंका पर आक्रमण करने के लिए निकले तो शमी वृक्ष ने रामचन्द्रजी की विजय की घोषणा की। इसीलिए दशहरे के दिन शाम को विजय काल में शमी की पूजा की जाती है।

pdfinbox.com